Hindi Poems by Khemendra Kamal Kumar

1. पिंजरा

एक छोटी सी पोठली
एक मीठा सा सपना
लेकर झगरू
चला सात समुद्र पार
बारह सौ मील दूर
जब आँख खुली
तो पाया रमणीक द्वीप
साहब का कटीला चाबुक
और भूत लैन में
एक अंधेरा कमरा
रोया ,गाया, भागा,
बहुत चिल्लाया
अपने को कोसा
लेकिन तोड़ न पाया
वो समुद्री पिंजरा
दिन रात महीने साल
धीरे-धीरे बीते
गिरमिट की काली रात
घाव के ऊपर घाव
और इज़्जत भी लुट गई
जटायू की भांति
कट गए पंख
जब पिंजरा खुला
अकेला तट पे पड़ा
वो उड़ न सका
फिर छूँटी पोठली
और रेत हुआ सपना।।

2. एक चेहरा

हजारों चेहरों में
मैं ढूढ रहा हूँ
छोटी सा आरजू लेकर
वहीं नगर वहीं डगर
घूम रहा हूँ
घूम रहा हूँ
घूम रहा हूँ
आँखों में बसी है
तेरे घुघराले बाल
और चमचमाते झुमके
जो कर देती है मेरी
बुरा हाल
बुरा हाल
बुरा हाल
ऐ खुदा, अब भी सुनने को
बेकरार हूँ मैं
होठों पे सिर्फ
मेरा नाम
मेरा नाम
मेरा नाम...

3. ऐ थम जा मदहोश परिंदे!

ऐ थम जा मदहोश परिंदे!
ये चाँद सी तड़प
सूरज सी जलन
अरमानों को
राख कर देगा
हमारे सपनों को
खाक कर देगा
ऐ थम जा मदहोश परिंदे!
उड़ना मुझको आता नहीं
जलना हमें गवारा नहीं
तुम उस डाली
हम इस डाली
इस से उस डाली
जाना हमें गवारा नहीं
ऐ थम जा मदहोश परिंदे!
संबंधों में बिखराव
अपनों से टकराव
यू पल-पल
जीना- मरना हमें गवारा नहीं
ऐ थम जा मदहोश परिंदे !

4. ये दिवाली वो दिवाली

क्या याद है तुम्हें
अपनी वो दिवाली
उस गाँव के
छोटे से घर पर
अब तो
कई साल बीत गए हैं
छूट गया गाँव
टूट गया वो घर
हमारी दिवाली के बीच
आमावस आ गई है
हर दिवाली के दरमीया
चौदह वनवास आ गई है
अब, हम हम न रहे
तुम तुम न रहे
तेरे मेरे बीच से
दिवाली
अजनबी हो चली है
ये दिवाली
वो दिवाली
न रही।।

5. अपना बसिंदा

आज कल न जाने क्यों
दिन घिसते-घिसते
रात हो जाती है
और रात - एक लम्बी बनवास
दिखाई देती है मुझे
ये सूरज चाँद सितारे
लेकिन दिखता नहीं क्यों
अपना बसिंदा आम का पेड़
जो सालों मे खड़ा
आँगन में हमारे
मिलती है
बदामी, केसर और तोतापुरी
मिलती है
रस भरी रसपुरी
लेकिन मिलता नहीं क्यों
अपना बसिंदा आम का पेड़
सुना है तूफान आने वाला है
माँ एक-एक आम गिन चुकी होगी
अगर विंस्टन से जान बच गई
तो एक नई कहानी बनेगी
लेकिन उस में
मैं न रहूँगा
मेरा अस्तित्व
न रहेगा
आऊँगा मैं एक दिन
इस वनवास के बाद
ये रात ढल जाने दो
सुबह हो जाने दो
आऊँगा मैं
फिर सात समुद्र पार
उस माटी के पास
जहाँ अपना बसिंदा है।।